रात्रि क्लास 8/9/68 ओमशान्ति बाप और वरसा याद है?

ऊँच ते ऊँच प्रिय ते प्रिय है भगवान। ठीक है ना। उनको बेहद का बाप कहा जाता है। यह भी तुम ब्राह्मण बच्चे ही जानते हो। दुनिया में और कोई नहीं जानते। जाना जाता ही है बाप द्वारा। वही कहते हैं हम सभी आत्माओं का बाप हूँ। वह कहते हैं हम भगवान हैं। बाप समझाते हैं भगवान एक है न कि सब। गॉड इज़ वन गाया जाता है। रचना भी एक है। रिपीटेशन का राज़ भी बाप समझाते हैं। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को बताते हैं। तुम जानते हो हमने 84 जन्म पूरे किये। अभी पुरानी दुनिया खत्म हो नई दुनिया स्थापन हो रही है। बाबा राजयोग सिखा रहे हैं। स्कूल है ना। तुम सब जानते हो हम राजयोग 5000 वर्ष पहले मिसल फिर से सीखते हैं। इसमें मुँझने की दरकार ही नहीं। सभी सेन्टर्स पर स्टुडेन्ट्स से पूछो। एम आबजेक्ट भी सामने हैं। सभी कहेंगे हम नई दुनिया के मालिक बनने आये हैं। राजयोग सीख ल0ना0 बने। सत्य ना0 की कथा तो जन्म–जन्मान्तर सुनते आये हो। ऐसे नहीं जब से भक्ति शुरू होता है तबसे सुनते आये हैं। कथाएँ पीछे शुरू होती हैं। तो बाप कहते हैं धणी के बन आधा कल्प सुख उठाया है। धणी के बनते हो तो आधा कल्प सुख मिलता है। निर्धण के बनते हो तो आधा कल्प दुख उठाते हो। यहाँ दुख बहुत हैं। वहाँ फिर एक भी दुख नहीं। उनको सुखधाम, इनको दुखधाम कहा जाता है। बेहद का बाप है बेहद का सुखकर्ता दुख हर्ता। बेहद का बाप आते ही हैं एक बार। उनसे कोई पूछने की बात रहती ही नहीं। बाप बेहद का है तो जरूर बेहद का वरसा देंगे। बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं। तो समझा जाता है हम स्वर्ग के मालिक बनते हैं। राजयोग सीख.... .... हैं राजाई प्राप्त करने लिए। अगर पूरा पुरुषार्थ नहीं करते, माया से हराये लेते हैं तो मार्कस कम हो जाती है। बाप कहते हैं तूफान बहुत आवेंगे। युद्ध का मैदान है ना। माया बहुतों को खा जाती है। ग्राह है ना। हप कर लेती है। अच्छे2 ब्राह्मण बच्चों को भी खा जाती है। रामराज्य और रावण राज्य दोनों इतना पहलवान है। बाप खुद कहते हैं माया बड़ी बलवान है। अच्छे2 महारथियों को हरा देती है। बच्चे भी कहते हैं बाबा आज क्रोध .....काम का तूफान आया। कोई लिखते हैं कोई छिपा लेते हैं तो वृद्धि होती रहती है। जमा के बदली घाटा पड़ जाता। सजा भी खावेंगे मानी भी थोड़ी मिलेगी। पुरुषार्थी भी ढेर हैं। जरूर निश्चय करते हैं; परन्तु माया पर जीत पाने में असमर्थ हो जाते हैं। खेल में हार जीत तो जरूर होती ही है। मन ते हारे हार है मन ते जीते जीत। अभी वह है माया की बात न कि मन की। माया ते हारे हार है माया ते जीते जीत। इस समय तुम बच्चों की बुद्धि में सारा चक्र फिरता है। तुमको कहा जाता है स्वदर्शन चक्रधारी। 84 जन्मों का चक्र तुमको याद है और कोई मनुष्य नहीं जिसको स्वदर्शनचक्रधारी कह सके अथवा आदि–मध्य–अन्त का मालूम हो। आगे तुम भी नहीं जानते थे। अभी जानते हो तब तो इतने म्युजियम प्रदर्शनी आदि खोलते हो बाप का परिचय देने। तुम पैगम्बर (के) बच्चे पैगम्बर, मैसेन्जर के बच्चे मैसेन्जर हो। सभी को पैगाम पहुँचाना है। पुरानी दुनिया का विनाश तो सामने (ख)ड़ा है ना। जैसे बधाइयाँ दी जाती हैं ना। यह भी तुम बधाइयाँ देते हो। कृष्ण आ रहे हैं। माना सतयुग –– स्थापना हो रही है। बैकुण्ठ आ रहा है। तुम बच्चे राजयोग सीख रहे हो। यहाँ संगठन में बैठे हो। बाहर में .... असुरों का संग हो जाता है। तो वह असर पड़ जाता है। यहाँ तो ब्राह्मणों का संग है। वहाँ किसम–2 के शूद्रों .... संग हो जाता है। दोस्त हैं देखेंगे चना, गोलगप्पे खा रहे हैं तो झट खा लेंगे। संग लगा ना। कहेंगे इसको खाने ..... क्या है। समझाया जाता है देवताओं को प्याज़ देते हो, बीड़ी पीते हैं। तुम भी इनके राजधानी में जाते हो ....। बाप कहते हैं तुम पदमापदम भाग्यशाली बन रहे हो। बाप आते हैं सुख का वरसा देने। यहाँ स्त्री को देखने भी हिलेंगे नहीं। उल्टा संकल्प नहीं आवेगा। घर में देखने से झट उल्टा संकल्प आ जावेगा। यहाँ तेल की चीज़ (खट)ाई आदि तमोगुणी चीज़ खाते हैं। देवताएँ कब हरी मिर्ची आदि खाते हैं? यहाँ तो कच्चे मिर्ची, हरी मिर्ची, पकोड़े, आचार खा लेते हैं। लोभी का अजन असर है। तमोगुणी चीज़ें खाने का न है। सम्पूर्ण तो कोई बना न है ना। बनने का है। कोई भी तमोगुणी चीज़ नहीं खाने का है। बनेंगे पिछाड़ी में। कर्मातीत अवस्था भी

पिछाड़ी में होगी। अभी तो बहुत मेहनत करनी है। संकल्प आदि सभी को आते हैं। पुरुषार्थी है ना। कर्मातीत अवस्था तो पिछाड़ी में होगी। जो कुछ भी याद न पड़े। कर्मातीत अवस्था हुई पढ़ाई पूरी। फिर लड़ाई शुरू हो जावेगी। मतलब तो पुरानी दुनिया बदलनी जरूर है। हमको बेहद के बाप से वरसा चाहिए नई दुनिया के लिए। राम का है वरसा, रावण का है श्राप। भारत अभी श्रापित है। दुख है ना। रावण का श्राप है। फिर बाप से वरसा मिलता है। दुनिया समझती है भगवान ही श्राप देते हैं वरसा भी भगवान देते हैं। सुख–दुख भगवान देते हैं। बाप कहते हैं रावण तुमको दुख देता है। मैं किसको कब दुख नहीं देता।

बाप से कोई भी प्रश्न पूछने का रहता नहीं है। वाणी ऐसे निकलती रहेगी तो संकल्पों का रेसपान्ड मिलता रहेगा। बेहद का बाप है। सभी बातें आपे ही समझाते हैं। आज नहीं कल, परसों समझावेंगे। पूछने की कोई बात नहीं रहती। बाप ने समझाया है पापात्मा हैं, पुण्यात्मा बनना है। देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को छोड़ मामेकम् याद करो। दैवी गुण धारण करो तो ऊँच पद पा लेंगे। बहुतों की खिजमत करो तुम मीठे2 बच्चे अपने ही तन–मन–धन से। आत्मा में मन बुद्धि है ना। तो बाप को याद करते हो सारी दुनिया पावन बनती है। धन भी तुम्हीं खर्च करते हो स्थापना में। और कोई से तुम लेते नहीं हो। म्युजियम खोलते हैं सभी ब्राह्मण ही खोलते हैं। राज–भाग तुम ब्राह्मण ही पाते हो। तो खर्चा भी तुम ब्राह्मण ही करेंगे ना। 40/50 हजार 12 मास का खर्चा हो जाता है। फिर आपे ही पूरा कर लेते हैं। बाबा देखते हैं अपने फण्ड आदि से उठाते हैं। तो लिख देते हैं। उनसे क्यों उठाते हो। हम मदद कर देते हैं; परन्तु बच्चे हिम्मत रख गवर्मेन्ट से एडवान्स ले लेते हैं। अच्छे काम में लग जाता है। जीत जी वहाँ से लेकर ट्रान्सफर कर देते हैं; क्योंकि यह है अविनाशी बैंक। सुदामा का मिसाल है ना। गरीब के पास है ही थोड़ा तो उन्हों को फिर उतना ही जास्ती मिलता है। साहुकार नहीं आवेंगे। उन्हों को स्वर्ग है। स्वर्ग में जो अपन को समझते हैं उनको क्या देंगे। गरीबों को मिलेगा। साहुकार गरीब बनते हैं, गरीब साहुकार बनते हैं। इसलिए बाप को गरीब निवाज कहा जाता है। लखपति तो आजकल बहुत ही हैं करोड़पति को साहुकार कहा जाता है। लखपति को साधारण कहा जाता है। इसलिए गाया जाता है फॉलो फादर। एक वह फादर जो कहते हैं मामेकम् याद करो। दूसरा यह फादर जिसने सरेन्डर किया। पहले2 जो आये वह सरेन्डर किया। सरेन्डर होने से फिर वरसा भी अच्छा मिलता है। भूख तो मर न सके। भल पैसा न ले आये हैं तो भी भूख मरते हैं? पहले तो बहुत ही अच्छा खान–पान मिलता था। मोटरें आदि सब थे। यहाँ तो मोटर नहीं। उनके बदली फिर मकान बनते म्युजियम खुलते रहते हैं। बाबा कहते हैं घेराव डालते रहो। 4 बड़े2 म्युजियम। बाकी छोटे2। पहले2 कैपीटल को घेराव डालो। तुम्हारी जीत सिर्फ एक ही बात में है। सिद्ध कर बताना है गीता का भगवान एक निराकार बाप है। कृष्ण का नाम डाल बड़ी भारी भूल कर दी है। झूठी गीता पढ़ते2 झूठे बन पड़े हैं। दूसरा फिर यह बेईज्जत का है 16,108 रानियाँ थी यह किया और फिर बाप को कण2 में कह दिया है। कितनी ग्लानि है। इन्हों के लिए तो मौत की सजा। बाप आकर सभी को मुक्तिधाम भेज देते हैं। स्वीट होम। भक्ति करते हैं मुक्ति के लिए; परन्तु पा नहीं सकते हैं। अभी तुम मुक्ति–जीवनमुक्ति को पाते हो। भारत इस समय भिखारी है ना। बाप भी कहते हैं मैं भारत में ही आता हूँ। बाप आते हैं तो फिर भारत क्या बन जाता है। सतयुग में तुम्हारा ही राज्य था। वहाँ सभी शुद्ध चीज़ें थी। साइंस का तन्त तुम्हारे सतयुग में काम आता है। जिससे तुम सुख पाते हो। साइंस सुख भी है तो मौत भी है। वहाँ तुमको साइंस से सुख ही मिलेगा। साइंस भी चाहिए तो सही ना। वहाँ नदियाँ आदि में किचड़ा थोड़े ही जावेगा। साइंस अच्छी2 ऐसी चीज़ें बनावेगी जो ज़रा भी गंद नहीं। यह भी ड्रामा बना हुआ है। बाप कल्प2 आकर यह राज समझाते हैं। मैं कैसे स्वर्ग की स्थापना करता हूँ। एक धर्म की स्थापना बाकी अनेक धर्म खलास हो जावेगा। अभी सारी दुनिया मरनींग हालत में है। तमोप्रधान दुनिया खत्म हो सतोप्रधान बन जावेगी। कब्रस्तान के ऊपर परिस्तान बनेगा। अच्छा मीठे–2 बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते। –: अटेन्शन प्लीज़ :–